श्री लक्ष्मीनाथ चालीसा

-:दोहा:-

गुरु चरणां सिर नायकर,बन्दू प्रथम गणेश।
लक्ष्मीनाथ जस कथण नै,मांगू बुद्धि विशेष।।
लक्ष्मीनाथ कृपायतन,त्रिभुवनपति भगवान।
बुद्धि वचन पावन करो,करूं विमल जस गान।

लक्ष्मीनाथ प्रभु दीनदयाला,
सर्वहितू बिन हेतु कृपाला।
जड चेतन सचराचर सारे,
रूप आपके न्यारे न्यारे।
सगलौ नै कर जोड नमामि,
फेर विमल जस वरणूं स्वामी।
जम्बूदीप मँह भारत देशा,
उस मँह राजस्थान प्रदेशा।

सीकर जिलो फतेपर नगरी,
अटल जोत जहँ प्रभु की जगरी।
हाट बीच प्रभु मंदिर पावन,
भव्य भवन सुंदर मैन भावन।
भीतर द्वार करत परवेशा,
बाँये हाथ गणेश महेशा।
सुमिरत जन के हरत क्लेशा,
जस बरणत श्रुती शारदा शेषा

सभामण्ड सिंहासन सोहें,
मूरति दिव्य देख मन मोहे।
नवल सिंगार रम्य सब साजे,
लक्ष्मी बायें अंग विराजें।
सेवा पूजा चलै अखण्डा,
सेवक प्रभुजी भोजक पण्डा।
परिकम्मा पावन प्रभु केरी,
प्रेम सहित जन देवें फेरी।

तहँ सँ निसरत बायें हाथा,
राजत शिव पंचायत साथा।
अम्बा हनुमत भैरव आला,
अर बैठ्या दो संत निराला।
भंगड बाबा अर बुधगरजी,
सुणत सभी की जायज अरजी।
फिर एकादश शिव पंचायत,
सो सारी जगती के मायत।

दर्शण निवण करत मन पावन,
सुमिरण तीनूं ताप नाशवान।
फिर हनुमन्त गदा कर साजै,
प्रभु के स्यामी स्याम विराजै।
नित सेवारत अति बलवीरा,
नाम लेत मेटत सब पीरा।
दर्श हेतु आवै नर नारी,
सब ही के मन श्रद्धा भारी।

प्रभु के दर की रीत निराली,
जो आवै, जावै नहीं खाली।
भाव सहित बालक जो आवै,
ध्रुव प्रहलाद सरिस हो ज्यावै।
कन्यावर,वर कन्या स्वामी,
पावै निज ईच्छा अनुगामी।
संतति हीन आय सुत पावै,
निर्धन आय धनी हो ज्यावै।

आंधो दिव्य दृष्टि पा ज्यावै,
अणहद नाद बधिर सुण पावै।
टूँटो ढोल बजावण लागै,
पांगों परबत पर चढ़ भागै।
मूक मुखर हो द्वारै आयां,
कोढ़ी पावै निर्मल काया।
जो दर्शण को नेम निभावै,
रोग दोष दुख सब मिट ज्यावै।

जब जो आरत टेर लगाई,
धाई जाई प्रभु किन्ही सहाई।
इक बर डूबत जहाज बचायो,
प्रभु का बागो भीज्यो पायो।
इसी ध्यान सँ जो कोई ध्यावै,
उसके विपत निकट नहीं आवै।
'भीखै' कै चित भगती भारी,
लोग भगति नहीं जात निहारी।

दर्शन की कर देई मनाई,
बो पीछे जा टेर लगाई।
सुण भीखै की आरत बानी,
प्रभु फैरयो मुख डोळी कानी।
प्रभु कै इस पावन करतब सँ,
दर्श इजाजत पाई तब सँ।
जो चित मँह वो ध्यान दृढावै,
सो प्रभु दर्श सदा ही पावै।

इक बर नाथ ! गांव सो जाणे,
कडों, भोग हित धरयो अड़ाणे।
तब सँ सूतक तक महँ साँईं,
भोग टेम सिर लगै सदाईं।
वो प्रभु चरित सुणे जो गावै,
सदा टेम सिर भोजन पावै।
जो सप्रेम पढ़े चालीसा,
तो गोपद सम भव वारिशा।

:-दोहा:-

निखिल भुवन पति जगत्पति,
श्रीपति लक्ष्मीनाथ।

'शंभु' कहत कर जोड़कर,
भव तारो धरि हाथ।।